MUAAF KARNE KI BARAKAAT (HINDI BAYAAN)

मुआ़फ़ करने की बरकात

दा'वते इस्लामी

के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में होने वाला सुन्नतों भरा बयान

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना, राहते क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : "जुमुआ़ के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो क्यूंकि येह यौमे मश्हूद है, इस दिन फ़िरिश्ते हाज़िर होते हैं, जब कोई शख़्स मुझ पर दुरूद भेजता है तो उस के फ़ारिग़ होने तक उस का दुरूद मेरे सामने पेश कर दिया जाता है।" हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه का बयान है कि मैं ने अ़र्ज़ की : "(या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) और आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाल के बा'द क्या होगा ?" इरशाद फ़रमाया : "हां ! (मेरी ज़ाहिरी) वफ़ात के बा'द भी (मेरे सामने इसी त़रह़ पेश किया जाएगा।") اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاْكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاء या'नी **अल्लाह** तआ़ला ने ज़मीन के लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों का खाना ह़राम कर दिया है।" فَنَبِيُّ اللّٰهِ حَيٌّ يُرْزَقُ पस **अल्लाह** तआ़ला का नबी ज़िन्दा होता है और उसे रिज़्क़ भी अ़त़ा किया जाता है।" (गुलदस्तए दुरूदो सलाम, स. **130**)

(ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته ـــــ الخ، ٢/ ٢٩١، حديث: ١٦٣٧)

है करम ही करम कि सुनते हैं
आप ख़ुश हो के बार बार दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी कोशिश कर के बिल ख़ुसूस जुमुअ़तुल मुबारक के दिन दुरूद शरीफ़ की कसरत करनी चाहिये कि अह़ादीसे मुबारका में इस रोज़ कसरत से दुरूदे पाक की ख़ास त़ौर पर ताकीद की गई है और ज़मीन, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक जिस्मों को क्यूं नहीं खाती ? इस की ईमान अफ़रोज़ वजह बयान करते हुवे ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی इरशाद फ़रमाते हैं : ज़मीन अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक क़दमों के बोसों से मुशर्रफ़

www.dawateislami.net

होती है और इसे येह सआ़दत मिलती है कि अम्बियाए किराम عَلَيۡهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुबारक अजसाम ज़मीन से मस होते हैं तो येह उन के जिस्मों को कैसे खा सकती है ? (فیض القدیر، حرف الھمزۃ، ۲/۶۷۸، تحت الحدیث: ۲۴۸۰)

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर उसी आन के बा'द उन की ह़यात मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है
रूह़ तो सब की है ज़िन्दा उन का जिस्मे पुर नूर भी रूह़ानी है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 372)

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं !

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الۡمُؤۡمِنِ خَيۡرٌ مِّنۡ عَمَلِهٖ" मुसलमान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है। (اَلۡمُعجمُ الکبیر لِلطّبرانی ج۶ ص۱۸۵ حدیث ۵۹۴۲)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب، تُوبُوۡا اِلَى اللّٰهِ، اُذۡكُرُوا اللّٰهَ वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिलजूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा।

صَلُّوۡا عَلَى الۡحَبِيۡب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

बयान करने की नियतें

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ۞ देख कर बयान करूंगा ۞ पारह **14**, सूरतुन्नह्ल, आयत **125 :** اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ की ह़दीस **4361** में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी ''पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा (या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा) ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेह्न बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज के बयान का मौज़ूअ़ है.....

''मुआ़फ़ करने की बरकात !!!''

सब से पहले मैं आप को नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के अ़फ़्वो दर गुज़र से मुतअ़ल्लिक़ एक वाक़िआ़ सुनाऊंगा, इस के बा'द मौज़ूअ़ की मुनासबत से चन्द आयाते क़ुरआनी और अह़ादीसे मुबारका भी बयान करूंगा। इस के बा'द बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के अ़फ़्वो दर गुज़र पर मबनी चन्द वाक़िआ़त भी आप के गोश गुज़ार करूंगा और आख़िर में

www.dawateislami.net

जूते पहनने के मदनी फूल पेश करूंगा । आइये ! सब से पहले हिकायत सुनते हैं ।

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अफ़्वो दर गुज़र

फ़त्हे मक्का के मौक़अ पर जब नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मक्कतुल मुकर्रमा (زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا) में दाख़िल हुवे तो इस्लाम के पक्के दुश्मन, अबू जह्ल के बेटे इकरमा (जो अभी मुसलमान नहीं हुवे थे) ने कहा कि मैं ऐसी सर ज़मीन में नहीं रहूंगा, जहां मुझे अपने बाप के क़ातिलों को देखना पड़े । चुनान्चे, अपने सुसराल पहुंचे और अपनी बीवी उम्मे हकीम को रख़्ते सफ़र बान्धने की हिदायत की । उन्हों ने रोकने की कोशिश करते हुवे कहा, ''ऐ कुरैश के नौजवानों के सरदार ! तुम कहां जा रहे हो ? तुम ऐसी जगह जा रहे हो, जहां तुम्हारी कोई पहचान नहीं ।'' लेकिन इकरमा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ने उन की बात मानने से इन्कार कर दिया ।

जब **हज़रते सय्यिदतुना उम्मे हकीम** बिन्ते हारिस मख़्ज़ूमिय्या رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا, सरवरे दो आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में इस्लाम क़बूल करने के लिये हाज़िर हुईं तो अर्ज़ की, या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इकरमा आप से भाग कर यमन जा रहा है, क्यूंकि वोह डरता है कि कहीं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़त्ल न कर डालें, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे अमान दे दीजिये ।'' **येह सुन कर रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अमान अ़ता फ़रमा दी** ! फिर उम्मे हकीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا अपने शोहर की तलाश में निकलीं और उन्हें तिहामा के साहिल पर जा लिया और उन्हें समझाने लगीं, ''ऐ चचा के बेटे ! मैं तुम्हारे पास लोगों में से सब से अफ़्ज़ल और नेक हस्ती (या'नी रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की तरफ़ से आई हूं, लिहाज़ा ! तुम खुद को हलाकत में न डालो ।'' फिर उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अमान के बारे में बताया तो इकरमा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه) ने पूछा, ''क्या तुम ने वाक़ेई ऐसा किया

www.dawateislami.net

है ?'' ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने जवाब दिया,'' हां ! मैं ने उन से अ़र्ज़ की तो उन्हों ने अमान दे दी ।'' येह सुन कर इ़करमा (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) उम्मे ह़कीम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के साथ वापस लौट आए ।

जब ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अ़म्र मख़ज़ूमी क़रशी (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) सरवरे कौनैन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवे तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को देख कर रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुवे । आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने खड़े हो गए और साथ ही उम्मे ह़कीम (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا) भी निक़ाब बान्धे मौजूद थीं । ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बोले, ''मैं गवाही देता हूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुह़म्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बन्दे और रसूल हैं ।'' और यूं सब ह़ाज़िरीन को अपने मुसलमान होने पर गवाह बना लिया । इस के बा'द सरकारे मदीनतुल मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कतुल मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से साबिक़ा कोताहियों की मुआ़फ़ी त़लब की । (ملخصاً۔ کتاب التوابین، ص۱۲۳)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अ़फ़्वो दर गुज़र की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि सय्यिदुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने कैसे ह़िल्म व कमाले अ़फ़्वो दर गुज़र का मुज़ाहरा फ़रमाया कि ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा बिन अ़म्र मख़ज़ूमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़त्ह़े मक्का के बा'द सिर्फ़ इस वजह से शहर छोड़ कर जा रहे थे कि इस्लाम लाने से पहले जो उन्हों ने मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंगों में शिरकत की थी तो कहीं हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उन से गुज़श्ता ग़लतियों पर मुआख़ज़ा (या'नी पूछ गछ) न फ़रमाएं, लेकिन जब आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन की साबिक़ा तमाम ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा कर उन्हें अमान अ़त़ा फ़रमा दी तो इस की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि ह़ज़रते सय्यिदुना

www.dawateislami.net

इकरमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दस्ते बा बरकत पर कलिमए त़य्यिबा पढ़ कर मुसलमान हो गए । फिर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दिल में शहनशाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ऐसी सच्ची मह़ब्बत क़ाइम हो गई कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में जंगे यरमूक में इस्लाम की मह़ब्बत और सर बुलन्दी की ख़ातिर कुफ़्फ़ार से लड़ते हुवे जामे शहादत नौश फ़रमा गए ।

सो बार तेरा देख के अ़फ़्व और तरह़्हुम
हर बाग़ी व सरकश का सर आख़िर को झुका है

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपने प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के त़रीक़े पर चलते हुवे ग़लती करने वालों को रिज़ाए इलाही की ख़ातिर मुआफ़ करने की आ़दत अपनानी चाहिये । चाहे कोई कितना ही ग़ुस्सा दिलाए हमें अपनी ज़बान और हाथों को क़ाबू में रखते हुवे दुन्या व आख़िरत की भलाई और रिज़ाए इलाही के लिये मुआफ़ कर देना चाहिये । क्यूंकि जब ज़बान बे क़ाबू हो जाती है तो बा'ज़ अवक़ात बने बनाए काम भी बिगाड़ देती है, इसी लिये किसी ने सच कहा कि

है फ़लाह़ व कामरानी नरमी व आसानी में
हर बना काम बिगड़ जाता है नादानी में

याद रखिये ! किसी से ग़लती होने के बा'द बदले की क़ुदरत रखने के बा वुजूद उसे मुआफ़ कर देना ऐसी बेहतरीन आ़दत है कि अगर हम इसे अपना लें तो हमारा मुआ़शरा अम्नो सुकून का गहवारा बन जाएगा और फ़ितने फ़साद के नापाक जरासीम ख़ुद ब ख़ुद दम तोड़ जाएंगे । अ़फ़्वो दर गुज़र की आ़दत अपनाने के लिये लाज़िमी है कि हम अपने ग़ुस्से को क़ाबू में रखें । याद रखिये ! ग़ुस्सा इन्सानी फ़ित़रत में शामिल एक ग़ैर इख़्तियारी सिफ़त है और येही अकसर दंगा फ़साद, दो भाइयों में जुदाई, मियां बीवी

www.dawateislami.net

में त़लाक़, आपस में नफ़रत और क़त्लो ग़ारत गिरी का बाइस होती है । क्यूंकि जब किसी के सामने उस के मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई बात हो जाए या कभी कोई ऐसा मुआ़मला पेश आ जाए जो त़बीअ़त पर गिरां गुज़रे तो ऐसे मौक़अ़ पर गुस्सा आ ही जाता है, लेकिन हमें ऐसे मौक़अ़ पर सब्र से काम लेते हुवे गुस्से को कन्ट्रोल करना चाहिये । क्यूंकि लोगों की ख़त़ाओं से चश्मपोशी करना, बार बार कोताहियों के बा वुजूद उन्हें मुआ़फ़ कर देना, उन के हाथों होने वाले नुक़्सानात पर किसी भी क़िस्म का मुआख़ज़ा (पूछ गछ) न करना, येह अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और ख़ुद ताजदारे ह़रम, शहनशाहे उमम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़रीक़ा है और क़ुरआने पाक में भी कई मक़ामात में अ़फ़्वो दर गुज़र की तरग़ीब मौजूद है । चुनान्चे, पारह **9** सूरतुल आ'राफ़, आयत नम्बर **199** में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इरशाद फ़रमाता है ।

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ ﴿۱۹۹﴾ (پ۹، الاعراف:۱۹۹)		**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** ऐ महबूब मुआ़फ़ करना इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से मुंह फेर लो ।

एक और मक़ाम पर इरशाद होता है :

وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ (پ۱۸، النور:۲۲)		**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और चाहिये कि मुआ़फ़ करें और दरगुज़र करें, क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि **अल्लाह** तुम्हारी बख़्शिश करे ।

येह आयते मुबारका उस वक़्त नाज़िल हुई जब वाक़िअ़ए इफ़्क (में उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा त़य्यिबा त़ाहिरा) (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) पर झूटी तोह्मत लगाई गई थी, इस में ह़ज़रते सय्यिदुना मिस्त़ह़ बिन उसासा (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) ने मुनाफ़िक़ीन की बातों में आ कर

www.dawateislami.net

ग़लती से हिस्सा लिया और गुफ्तगू की तो हज़रते सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने क़सम खाई कि आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) हज़रते सय्यिदुना मिस्तह़ बिन उसासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रफ़ाक़त व नर्मी ख़त्म कर देंगे।

(صحیح بخاری جلد ۲ ص ۵۹۶ کتاب المغازی)(فیضانِ احیاء العلوم 260)

हज़रते सय्यिदुना मिस्तह़ बिन उसासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ, हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़ाला के बेटे, बदरी सह़ाबी, ग़रीब और मुहाजिर थे, हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ही उन का ख़र्च उठाते थे, मगर चूंकि उम्मुल मोअमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर तोह्मत लगाने वालों के साथ उन्हों ने इत्तिफ़ाक़ किया था। इस लिये आप ने येह क़सम खाई। जब येह आयत सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ी तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कहा बेशक मेरी आरज़ू है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरी मग़फ़िरत करे और मैं मिस्तह़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के साथ जो हुस्ने सुलूक करता था, उस को कभी मौक़ूफ़ (ख़त्म) न करूंगा। चुनान्चे, आप (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने उस को जारी फ़रमा दिया। (کنز الایمان، مع خزائن العرفان، ص ۶۵۳، تسہیل وخلاصہ)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने हज़रते सय्यिदुना मिस्तह़ बिन उसासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से क़त्ए़ तआ़ल्लुक़ी करने की क़सम खा ली थी मगर जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने कमाले ह़िल्म का मुज़ाहरा करते हुवे रिज़ाए इलाही की ख़ातिर हज़रते सय्यिदुना मिस्तह़ बिन उसासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुआ़फ़ फ़रमा दिया। अगर ऐसा मुआ़मला हमारे साथ पेश आ जाए तो हम ऐसे शख़्स से बात चीत, मैल जौल, ह़त्ता कि सलाम दुआ़ भी न करें। बल्कि हम तो छोटी छोटी बातों पर रिश्तेदारों से तआ़ल्लुक़ात तोड़ देते, हुस्ने सुलूक से हाथ खींच लेते और बात चीत ख़त्म कर देते हैं जो कि इन्तिहाई बुरी आ़दत है। हमें चाहिये कि हमारे साथ कोई कैसा ही बुरा सुलूक करे, हम हमेशा हुस्ने सुलूक से ही पेश आएं।

www.dawateislami.net

ग़लत़ क़सम खा ली तो क्या करना चाहिये ?

यहां एक ज़रूरी मस्अला भी समाअ़त फ़रमा लीजिये कि अगर किसी ने गुनाह पर क़सम खाई, मसलन कहा मैं वालिदैन से बात न करूंगा या फ़ुलां (शख़्स) को क़त्ल करूंगा, तो उस पर लाज़िम है कि वोह ह़िन्स करे (या'नी क़सम तोड़ दे) और कफ़्फ़ारा दे दे क्यूंकि येह कफ़्फ़ारा उस गुनाह के मुक़ाबले में कम तर है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. **13** स. **499**)

क़सम का कफ़्फ़ारा दो !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबुल अह़वस औ़फ़ इब्ने मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا अपने वालिद से रिवायत फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाइये कि मैं अपने चचाज़ाद भाई के पास कुछ मांगने जाता हूं तो वोह मुझे नहीं देता, न ही सिलए रेह़मी (रिश्तेदार होने की वजह से हुस्ने सुलूक) करता है, फिर उसे (जब) मेरी ज़रूरत पड़ती है तो मेरे पास आता है, मुझ से कुछ मांगता है। मैं क़सम खा चुका हूं कि न उसे कुछ दूंगा न सिलए रेह़मी करूंगा। तो मुझे हुज़ूर, सरापा नूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हुक्म दिया कि जो काम अच्छा है वोह करूं और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूं। (سُنَنِ نَسائی ص۶۱۹حدیث ۳۷۹۳) (नेकी की दा'वत स. **184**) लिहाज़ा हमें भी इस त़रह़ की क़समें खाने और अपने रिश्तेदारों से क़त़्ए़ तअ़ल्लुक़ी करने से बचना चाहिये और हमारे साथ वोह जैसा भी सुलूक करें, मगर हमें ईंट का जवाब पथ्थर से देने के बजाए उन्हें मुआ़फ़ कर देना चाहिये।

तुम गर्म राख खिला रहे हो !

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है : एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत عَلٰی صَاحِبِہَا الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे कुछ रिश्तेदार हैं, मैं तो उन से सिलए रेह़मी करता हूं, लेकिन वोह मुझ से क़त़्ए़ रेह़मी (रिश्तेदारी तोड़ा) करते हैं और मैं उन से अच्छा सुलूक करता हूं जब कि वोह मुझ से बुरा सुलूक करते हैं, मैं उन से बुर्दबारी (सब्र व तह़म्मुल) से पेश आता हूं जब कि वोह मुझ से जहालत का बरताव करते

www.dawateislami.net

हैं । तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अगर तुम वाक़ेई ऐसा करते हो, जैसा तुम ने कहा तो गोया तुम उन्हें गर्म राख खिला रहे हो और जब तक तुम ऐसा करते रहोगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उन के मुक़ाबले में तुम्हारे साथ एक मददगार मौजूद होगा । (जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. **1** स. **221**) (صحیح مسلم، کتاب البر والصلۃ، باب صلۃ الرحم۔۔۔۔۔۔الخ، الحدیث: ۲۵۲۵، ص ۱۱۲۶)

मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से **''तुम उन्हें गर्म राख खिला रहे हो''** के तह़्त इस के मुख़्तलिफ़ मआ़नी बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : एक येह कि इस ह़ालत में उन लोगों को तेरा माल ह़राम है और फिर (भी) वोह खा रहे हैं तो गोया अपने मुंह में भूबल (गर्म राख) भर रहे हैं, दूसरे येह कि उन को इन ह़ालात में ऐसी शर्मिन्दगी चाहिये कि उन के मुंह झुलस जावें जैसे भूबल पड़ जाने से मुंह झुलस जाता है, तीसरे येह कि उन की बुराइयों की इ़वज़ तेरा उन से (हुस्ने) सुलूक करना गोया उन के मुंह भूबल से भरना है, तू उन्हें ज़लील कर रहा है, तेरी इ़ज़्ज़त बढ़ रही है (और) उन की शर्मिन्दगी व ज़िल्लत । ख़ैरात से माल बढ़ता है और अ़फ़्वो करम से इ़ज़्ज़त बढ़ती है । (मिरआतुल मनाजीह़ जि. **6**, स. **524**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ग़ुस्सा पीने वाले

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब और हर मुसलमान के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आना चाहिये, अगर कोई हमें तक्लीफ़ पहुंचाए तो ग़ुस्से में आ कर बदला लेने के बजाए अपने ग़ुस्से को क़ाबू में रखना चाहिये । ग़ुस्सा पी जाने वालों की फ़ज़ीलत बयान करते हुवे पारह **4**, सूरए आले इ़मरान, आयत : **134** में इरशादे रब्बानी है :

وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۱۳۴﴾ (پ۴، آل عمران: ۱۳۴)	**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और ग़ुस्सा पीने वाले और लोगों से दर गुज़र करने वाले और नेक लोग **अल्लाह** के महबूब हैं ।

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत, मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان ने इस आयते मुबारका के तह़्त "**तफ़्सीरे नईमी**" में मुत्तक़ी लोगों की एक सिफ़त येह भी बयान फ़रमाई है कि वोह सख़्त ग़ुस्से की ह़ालत में आपे से बाहर नहीं हो जाते बल्कि नफ़्सानी ग़ुस्सा पी जाते हैं कि बा वुजूद क़ुदरत के ग़ुस्सा जारी (नाफ़िज़) नहीं करते और अपने मा तह़्तों की ख़त़ाओं या दूसरों की ईज़ाओं या मुजरिमों के जुर्मों को बख़्श देते हैं कि बा वुजूद क़ादिर होने के अपने नफ़्स का बदला नहीं लेते, **अल्लाह** तआ़ला ऐसे नेककारों को जो मख़्लूक़ के लिये मुज़िर (नुक़्सान देह) न हों बल्कि मुफ़ीद हों, बहुत ही पसन्द फ़रमाता है कि इन पर इस एह़सान के बदले एह़सान फ़रमाएगा और इन्हें इन्आ़म देगा, येह लोग अपनी हैसिय्यत के लाइक़ नेकियां कर लें, रब तआ़ला अपनी शान के लाइक़ इन्हें इन्आ़म देगा। (तफ़्सीरे नईमी, जिल्द. **4**, सफ़ह़ा. **187**)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ी ज़माना बात बात पर लड़ना झगड़ना, छोटी छोटी ग़लतियों पर आग बगूला हो जाना और लड़ने मारने पर कमरबस्ता हो जाना, तह़म्मुल और बरदाश्त से काम न लेते हुवे हर वक़्त लड़ाई के लिये तय्यार रहना, हमारे मुआ़शरे में आ़म है। مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ बा'ज़ अफ़राद तो ऐसे भी पाए जाते हैं कि जो लड़ाई झगड़ा करने के बहाने ढूंडते हैं, जब भी कोई मौक़अ़ हाथ लगता है तो झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलोच, तोहमत, बोहतान, फ़ोह़ूश गोई, त़न्ज़बाज़ी, दिल आज़ार नक़्लें उतारने, दिल दुखाने वाले अन्दाज़ में आंखें दिखाने, घूरने, डराने, झाड़ने, मारने, दूसरे को ज़लील करने वग़ैरा गुनाहों का ऐसा त़ूफ़ाने बद तमीज़ी बरपा करते हैं कि اَلْاَمَانُ وَالْحَفِيْظ

झगड़ालू शख़्स, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को नापसन्द है !

याद रखिये ! बात बात पर झगड़ा करने वाले शख़्स को ह़दीसे पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा नापसन्दीदा शख़्स क़रार दिया गया है। चुनान्चे, उम्मुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा

www.dawateislami.net

सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا से रिवायत है कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَبۡغَضُ الرِّجَالِ اِلَی اللّٰہِ الۡاَلَدُّ الۡخَصِمُ या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां सब से नापसन्दीदा शख़्स वोह है जो बहुत ज़ियादा झगड़ालू हो।

(صحیح البخاری، کتاب المظالم، باب قول اللہ تعالی: وَہُوَ اَلَدُّ الۡخِصَامِ، الحدیث ۲۴۵۷، ص ۱۹۳)

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ बयान करते हैं कि नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स बिग़ैर इल्म के ख़ुसूमत या'नी लड़ाई झगड़े में पड़ता है, वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहता है, यहां तक कि इसे छोड़ दे।

(موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، کتاب الصمت، ۷/ ۱۱۱، حدیث: ۱۵۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सुना आप ने कि झगड़ालू शख़्स, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ को किस क़दर नापसन्द है कि जब तक वोह लड़ाई झगड़े में मश्ग़ूल रहता है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की नाराज़ी में रहता है। लिहाज़ा हमारे लिये मुनासिब येही है कि जितना हो सके, लड़ाई झगड़े से बचने की कोशिश करें कि ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स ह़क़ पर होने के बा वुजूद झगड़ा छोड़ दे, उस के लिये जन्नत के आ'ला दरजे में घर बनाया जाता है।

(جامع الترمذی، ابواب البر والصلۃ، باب ماجاء فی المراء، الحدیث ۱۹۹۳، ص ۱۸۵۱، اعلی بدلہ وسط)

लिहाज़ा बदला लेने के बजाए मुआफ़ करना इख़्तियार कीजिये कि इसी में हमारी दुन्या व आख़िरत की भलाई है।

कोई धुतकारे या झाड़े बल्कि मारे, सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से, सब्र कर

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"**मुआफ़ करना**" इख़्तियार करने के बारे में **4** फ़रामीने मुस्त़फ़ा सुनिये और अ़फ़्वो दर गुज़र का ज़ेह्न बनाइये चुनान्चे,

www.dawateislami.net

मुआ़फ़ करने के फ़ज़ाइल

(1) ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلٰی نَبِیِّنَاوَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ ! तेरा कौन सा बन्दा तेरे नज़दीक ज़ियादा इ़ज़्ज़त वाला है ? **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया : जो क़ुदरत होने के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे । (تاریخ مدینہ دمشق، الرقم: ۷۷۴۱، موسیٰ بن عمران، ۶۱/۱۳۴)

(ग़ीबत की तबाहकारियां सफ़ह़ा, **480**)

(2) जिस को ग़ुस्सा आया, फिर बुर्दबार (बरदाश्त करने वाला) हो गया, तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत का ह़क़दार हो गया ।

(الکامل فی الضعفاء الرجال، مطرف بن معقل، ج۸، ص۱۱۲) (जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, जि. **1**, स. **224**)

(3) जो बदला लेने पर क़ादिर होने के बा वुजूद, ग़ुस्सा पी ले तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे लोगों के सामने बुलाएगा ताकि उस को इख़्तियार दे कि जन्नत की ह़ूरों में से जिसे चाहे पसन्द कर ले । (जन्नत में ले जाने वाले आ'माल, स. **558**) (ابن ماجہ، کتاب الزھد، باب الحلم، رقم ۴۱۸۶، ج۴، ص۴۶۲ بتغیر قلیل)

(4) तुम में सब से ज़ियादा बहादुर वोह है जो ग़ुस्से के वक़्त ख़ुद पर क़ाबू पा ले और सब से ज़ियादा बुर्दबार (बरदाश्त करने वाला) वोह है, जो त़ाक़त के बा वुजूद मुआ़फ़ कर दे । (کنز العمال، کتاب الاخلاق، الحدیث: ۷۶۹۴، ج۳، ص۲۰۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुन्या में इन्तिक़ाम लेते हुवे तल्ख़ जुम्ले बोल कर या किसी से लड़ झगड़ कर इतने बड़े अज्र को गंवा देना, यक़ीनन बे वुक़ूफ़ी ही है । लिहाज़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा की ख़ातिर लोगों की ख़त़ाओं को दर गुज़र करना चाहिये ।

कोई धुतकारे या झाड़े बल्कि मारे, सब्र कर
मत झगड़, मत बुड़बुड़ा, पा अज्र रब से, सब्र कर

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अहले फ़ज़्ल कहां हैं ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आइये अब मैं आप को दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** से एक अ़ज़ीमुश्शान रिवायत सुनाता हूं, पहले कुछ इस किताब का तआ़रुफ़ सुन लीजिये ! फिर आप को अ़ज़ीमुश्शान रिवायत पेश करूंगा, येह वोह अ़ज़ीम किताब है कि जिस में नेक आ'माल के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल **2** हज़ार से ज़ाइद मुस्तनद अह़ादीसे मुबारका को जम्अ़ किया गया है, अस्ल किताब अ़रबी में है, मक्तबतुल मदीना ने इस का उर्दू तर्जमा शाएअ़ किया है, मुबल्लिग़ीन व मुबल्लिग़ात, आइम्मए मसाजिद व ख़ुत़बा के लिये येह किताब बेह़द मुफ़ीद है, येह एक ऐसी प्यारी किताब है कि इस के मुत़ालए़ से नेक आ'माल (मसलन : इ़ल्म सीखने, फ़र्ज़ नमाज़ के साथ साथ तहज्जुद वग़ैरा पढ़ने, ज़कात के साथ साथ नफ़्ली सदक़ात देने, फ़र्ज़ रोज़ों के साथ साथ नफ़्ली रोज़े रखने, ह़ज्जो उ़मरह की सआ़दत पाने, क़ुरआन पढ़ने पढ़ाने, सिलए रेह़मी करने, यतीम, मिस्कीन, मोह़ताज की परवरिश करने, मरीज़ की इ़यादत करने, सच बोलने, आ़जिज़ी इख़्तियार करने, मुसीबत व बीमारी पर सब्र करने वग़ैरा) की रग़बत पैदा होगी, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ **''जन्नत में ले जाने वाले आ'माल''** आप मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कर सकते हैं, दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से इस किताब को पढ़ा जा सकता है, इस किताब को मुफ़्त में डाऊन लोड भी किया जा सकता है और प्रिन्ट आऊट भी किया जा सकता है । इस मुक़द्दस और पाकीज़ा किताब में लिखा है कि ताजदारे अम्बिया (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने इरशाद फ़रमाया कि ! बरोज़े क़ियामत जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मख़्लूक़ को जम्अ़ फ़रमाएगा तो एक पुकारने वाला पुकारेगा : ''अहले फ़ज़्ल कहां हैं ?'' थोड़े से लोग उठेंगे और जल्दी जल्दी जन्नत की त़रफ़ चलेंगे । फ़िरिश्ते उन से मिलेंगे तो कहेंगे : ''क्या

www.dawateislami.net

बात है कि हम तुम्हें तेज़ी से जन्नत की त़रफ़ जाते हुवे देखते हैं ?'' वोह कहेंगे : ''हम अहले फ़ज़्ल हैं।'' फ़िरिश्ते पूछेंगे : ''तुम्हारी क्या फ़ज़ीलत है ?'' वोह जवाब देंगे : ''जब हम पर ज़ुल्म किया जाता तो हम सब्र करते, जब हम से बुरा सुलूक किया जाता तो हम मुआ़फ़ कर देते और जब हम से जहालत का बरताव किया जाता तो हम बुर्दबारी (बरदाश्त) से काम लेते।'' उस वक़्त उन से कहा जाएगा : ''जन्नत में दाख़िल हो जाओ, अ़मल करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है !

(التر غیب والترھیب کتاب الادب، باب الرفق، حدیث ۱۸، ج ۳، ص ۲۸۱) (जन्नत में ले जाने वाले आ'माल, स.**562**)

बिला ह़िसाब हो जन्नत में दाख़िला या रब
पड़ोस ख़ुल्द में सरवर का हो अ़त़ा या रब

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के हां बुज़ुर्गी

रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हां इ़ज़्ज़त व बुज़ुर्गी चाहो।'' सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : ''कैसे ?'' इरशाद फ़रमाया : ''जो तुम से क़त़्अ़ तअ़ल्लुक़ी करे (रिश्तेदारी तोड़े) उस से सिलए रेह़्मी (रिश्तेदारी क़ाइम) करो, जो तुम्हें मह़रूम करे उसे अ़त़ा करो और जो तुम से जहालत से पेश आए तुम उस के साथ बुर्दबारी इख़्तियार करो। (مکارم الاخلاق لابن ابی الدنیا، حدیث ۲۳، ص ۳۱، لباب الاحیاء ص ۲۵۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब कोई हम से उलझे या बुरा भला कहे, उस वक़्त ख़ामोश रहने में ही आ़फ़िय्यत है, अगर्चे शैत़ान लाख वस्वसे डाले कि तू भी इस को जवाब दे, वरना लोग तुझे बुज़दिल कहेंगे, मियां ! शराफ़त का ज़माना नहीं है, इस त़रह़ तो लोग तुझे जीने भी नहीं देंगे वग़ैरा वग़ैरा।

आइये ! मैं आप को शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले ''**ग़ुस्से का इलाज**''

www.dawateislami.net

से एक ह़दीसे मुबारका बयान करता हूं, इस को ग़ौर से समाअ़त फ़रमाइये, सुन कर आप को अन्दाज़ा होगा कि दूसरे के बुरा भला कहते वक़्त ख़ामोश रहने वाला, रह़मते इलाही عَزَّوَجَلَّ के किस क़दर नज़दीक तर होता है । चुनान्चे, एक शख़्स ने सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को बुरा कहा, जब उस ने बहुत ज़ियादती की तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने उस की बा'ज़ बातों का जवाब दिया (ह़ालांकि आप की जवाबी करवाई मा'सिय्यत (गुनाह) से पाक थी मगर) सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वहां से उठ गए । सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पीछे पहुंचे, अ़र्ज़ की : "या रसूलल्लाह (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) वोह मुझे बुरा कहता रहा, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तशरीफ़ फ़रमा रहे, जब मैं ने उस की बात का जवाब दिया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उठ गए !" फ़रमाया : "तुम्हारे साथ फ़िरिश्ता था, जो उस का जवाब दे रहा था, फिर जब तुम ने ख़ुद उसे जवाब देना शुरूअ़ किया तो शैत़ान दरमियान में कूद पड़ा ।"

(مسند امام احمد بن حنبل ج۳ص۴۳۴حدیث۹۶۳۰) (गुस्से का इ़लाज, स. **20**)

जो चुप रहा उस ने नजात पाई

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप को बोल कर बारहा पछताना पड़ा होगा मगर ख़ामोश रह कर कभी नदामत नहीं उठाई होगी । तिर्मिज़ी शरीफ़ में है : "مَنْ صَمَتَ نَجَا **या'नी जो चुप रहा उस ने नजात पाई ।**"

(سنن الترمذی ج۴ص۲۲۵حدیث۲۵۰۹) (गुस्से का इ़लाज, स. **21**)

और येह मुह़ावरा भी ख़ूब है : **"एक चुप सो को हराए ।"**

कर भला, हो भला !

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ शरफ़ुद्दीन सा'दी शीराज़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِی नक़्ल करते हैं : एक नेक सीरत शख़्स अपने ज़ाती दुश्मनों का ज़िक्र भी बुराई से

www.dawateislami.net

न करता था । जब भी किसी की बात छिड़ती, उस की ज़बान से नेक कलिमा ही निकलता । उस के मरने के बा'द किसी ने उसे ख़्वाब में देखा तो सुवाल किया : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तेरे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? येह सुवाल सुन कर उस के होंटों पर मुस्कुराहट आ गई और वोह बुलबुल की त़रह़ शीरीं आवाज़ में बोला : "दुन्या में मेरी येही कोशिश होती थी कि मेरी ज़बान से किसी के बारे में कोई बुरी बात न निकले, नकीरैन ने भी मुझ से कोई सख़्त सुवाल न किया और यूं मेरा मुआ़मला बहुत अच्छा रहा ।" (بوستانِ سعدی ص ۱۴۴ باب المدینہ کراچی) (गुस्से का इ़लाज, स. **21**)

नर्मी ज़ीनत बख़्शती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाया ! नर्मी और अफ़्वो दर गुज़र करने से **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ की किस क़दर रह़मत होती है । काश ! हम भी अपनी बे इ़ज़्ज़ती करने वालों और सताने वालों को मुआ़फ़ करना इख़्तियार करें और हर मुमकिन कोशिश करते हुवे झगड़ा न ही करें कि इसी में आ़फ़िय्यत है । क्यूंकि बदला लेने में बक़दरे ज़रूरत पर इक्तिफ़ा न करते हुवे ह़द से बढ़ जाने के साथ साथ दीगर गुनाहों में भी पड़ने का क़वी अन्देशा है । याद रखिये ! बदले की भर पूर त़ाक़त रखते हुवे भी किसी के नाज़ैबा रविय्ये, नामुनासिब सुलूक या ज़ियादती को बरदाश्त कर जाना, और अपने ह़ुक़ूक़ छिन जाने पर बा वुजूदे क़ुदरत सब्र करना, बड़े दिल वालों का ही ह़िस्सा है और इस की बड़ी फ़ज़ीलत है ।

चुनान्चे, मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़त्तर है : जो ग़ुस्सा पी जाएगा ह़ालांकि वोह नाफ़िज़ करने पर क़ुदरत रखता था तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन उस के दिल को अपनी रिज़ा से मा'मूर फ़रमा देगा ।

(کنز العُمّال جز ۳، ص ۳۶۱، حدیث: ۷۱۶۰) (गुस्से का इ़लाज, स. **11**)

www.dawateislami.net

बुराई करने वाले के साथ भलाई

येही वजह है कि हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن अपने साथ नाज़ैबा सुलूक करने वालों को न सिर्फ़ मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते थे बल्कि उन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आते । चुनान्चे, एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز सुवारी पर कहीं जा रहे थे कि एक पैदल चलने वाला शख़्स सुवारी की झपट में आ गया और उस ने ग़ुस्से से कहा : देख कर नहीं चल सकते ? जब सुवारियां आगे निकल गईं, तो उस शख़्स ने कहा : कोई है जो मुझे अपने पीछे बिठाए ? तो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيْز ने अपने ग़ुलाम से कहा कि इस को अपने साथ बिठा कर चश्मे तक ले चलो । (سیرت ابن جوزی ص۸۰۶)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن के बारे में मन्क़ूल है कि एक शख़्स ने आप को बुरा भला कहा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने अपनी सियाह (काले) रंग की चादर उतार कर उसे दे दी और उसे एक हज़ार दिरहम देने का भी हुक्म दिया । (احیاء العلوم، ج۳، ص۵۴۴)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों के अख़्लाक़ कितने उ़म्दा होते हैं कि अगर कोई तक्लीफ़ दे तब भी ग़ुस्से में आना और उस से बदला लेना तो दर किनार बल्कि त़रह़ त़रह़ से नवाज़ा करते हैं । जैसा कि हम ने देखा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمُبِيْن को जब किसी शख़्स ने बुरा भला कहा तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने उसे न सिर्फ़ मुआ़फ़ फ़रमा दिया बल्कि हुस्ने सुलूक से पेश आते हुवे इन्आ़मो इकराम से भी नवाज़ दिया ! उ़लमा फ़रमाते हैं कि इस त़रह़ सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने पांच अच्छी ख़स्लतों को जम्अ़ किया : (1) बुर्दबारी (बरदाश्त) (2) तक्लीफ़ न देना (3) उस शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दूर करने वाली बात से बचाना (4) तौबा और

www.dawateislami.net

नदामत पर उक्साना और (5) बुराई के बदले भलाई करना। इस त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने मा'मूली दुन्या के बदले येह तमाम चीज़ें ख़रीद लीं।

(احیاءالعلوم، ج۳، ص۵۴۴)

मुआ़फ़ी मांग लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से उन लोगों को ग़ौरो फ़िक्र करना चाहिये जो लड़ाई झगड़े में पहल करते हैं और फिर लड़ाई के बा'द मुंह फुला के बैठ जाते हैं, अगर कोई सुल्ह़ की निय्यत से आए तो सुल्ह़ करने के बजाए सख़्त कलिमात के ज़रीए मज़ीद दिल आज़ारी का बाइस बनते हैं। ऐसों को चाहिये कि जिस जिस की दिल आज़ारी की है, फ़ौरन उन से मुआ़फ़ी मांग कर उन्हें राज़ी कर लें और तौबा भी करें।

अगर किसी फ़र्द के बारे में येह सोच कर बाज़ रहे कि मुआ़फ़ी मांगने से उस के सामने मेरी "**पोज़ीशन डाऊन**" हो जाएगी, तो ख़ुदारा ग़ौर फ़रमा लीजिये ! क़ियामत के रोज़ अगर येही फ़र्द हमारी नेकियां ह़ासिल कर के अपने गुनाहों का बोझ हमारे सर पर डाल देगा तो उस वक़्त क्या होगा ? ख़ुदा की क़सम ! सह़ीह़ मा'नों में हमारी "**पोज़ीशन**" की धज्जियां तो रोज़े क़ियामत उस वक़्त उड़ेंगी जब कोई दोस्त, या अ़ज़ीज़ हमदर्दी करने वाला भी न मिलेगा। तो ख़ुदारा जल्दी कीजिये ! अपने वालिदैन के क़दमों में गिर कर, अपने अ़ज़ीज़ों के आगे हाथ जोड़ कर, अपने मातह़तों के पाउं पकड़ कर, अपने इस्लामी भाइयों और दोस्तों से गिड़ गिड़ा कर, उन के आगे ख़ुद को ज़लील कर के आज दुन्या में ही मुआ़फ़ी मांग कर आख़िरत की इ़ज़्ज़त ह़ासिल करने का सामान कर लीजिये। (ज़ुल्म का अन्जाम, स. 51) वरना जहन्नम का हौलनाक अ़ज़ाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा। दिल के कानों से सुनिये कि ह़ज़रते सय्यिदुना यज़ीद बिन शजरा رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ समन्दर के किनारे होते हैं इसी त़रह़ जहन्नम के भी किनारे हैं, जिन में बुख़्ती ऊंट जैसे सांप और ख़च्चरों जैसे बिच्छू रहते हैं। अहले जहन्नम जब अ़ज़ाब में कमी के लिये फ़रयाद करेंगे तो हुक्म होगा, किनारों से बाहर निकलो, वोह जूं ही निकलेंगे

www.dawateislami.net

तो वोह सांप उन्हें होंटों और चेहरों से पकड़ लेंगे और उन की खाल तक उतार लेंगे, वोह लोग वहां से बचने के लिये आग की त़रफ़ भागेंगे, फिर उन पर खुजली मुसल्लत़ कर दी जाएगी वोह इस क़दर खुजाएंगे कि उन का गोश्त पोस्त सब झड़ जाएगा और सिर्फ़ हड्डियां रह जाएंगी, पुकार पड़ेगी : ऐ फुलां ! क्या तुझे तक्लीफ़ हो रही है ? वोह कहेगा : हां । तो कहा जाएगा, येह उस ईज़ा का बदला है जो तू मोमिनों को दिया करता था ।

(اَلتَّرْغِیب وَالتَّرْہِیب ج۴ص۲۸۰حدیث۵۶۴۹دار الفکر بیروت)(ज़ुल्म का अन्जाम, स. **21**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

تُوْبُوْا اِلَی اللّٰہِ! اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब किसी पर ग़ुस्सा आ जाए और दिल लड़ाई झगड़े को बेक़रार हो जाए तो अपने आप को इस त़रह़ समझाइये : मुझे दूसरों पर अगर कुछ क़ुदरत ह़ासिल है भी, तो इस से बेह़द ज़ियादा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझ पर क़ादिर है, अगर मैं ने इस लड़ाई झगड़े में पड़ कर किसी की दिल आज़ारी या ह़क़ तलफ़ी कर डाली तो क़ियामत के रोज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ग़ज़ब से मैं किस त़रह़ मह़फ़ूज़ रह सकूंगा ? आह ! बरोज़े ह़श्र कहीं हमारे ऐ़ब न खोल दिये जाएं ।

कमर तोड़ी है इ़स्यां ने, दबाया नफ़्सो शैतां ने
न करना ह़श्र में रुस्वा, मेरा रखना भरम मौला

न करना ह़श्र में पुरसिश मेरी, हो बे सबब बख़्शिश
अ़त़ा कर बाग़े फ़िरदौस अज़ पए शाहे उमम मौला

गुनह करते हुवे गर मर गया तो क्या करूंगा मैं ?
बनेगा हाए मेरा क्या ? करम फ़रमा करम मौला

अ़त़ा कर आ़फ़िय्यत तू नज़्अ़ व क़ब्रो ह़श्र में या रब
वसीला फ़ात़िमा ज़हरा का कर लुत़्फ़ो करम मौला

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बुज़ुर्गाने दीन और अ़फ़्वो दर गुज़र

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मुआ़फ़ करने की आ़दत अपनाइये कि इस में फ़ाइदा ही फ़ाइदा है, हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن की येह आ़दते मुबारका थी कि जब कोई इन से किसी भी त़रह़ का बुरा सुलूक करता तो येह ह़ज़रात उस के साथ भी हुस्ने सुलूक से पेश आते और उस की ग़लत़ी को मुआ़फ़ कर दिया करते । आइये ! मुआ़फ़ करने का ज़ेह्न बनाने के लिये अस्लाफ़े किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के वाक़िआ़त सुनते हैं । चुनान्चे,

अनोखा सब्र

ह़ज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन क़ैस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि आप ने बुर्दबारी कहां से सीखी है ? फ़रमाया : ह़ज़रते सय्यिदुना क़ैस बिन आ़सिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से । पूछा गया : वोह किस क़दर बुर्दबार (बरदाश्त करने) वाले थे ? फ़रमाया : एक मरतबा वोह अपने घर में बैठे थे कि एक लौंडी उन के पास सीख़ लाई, जिस पर भुना हुवा गोश्त था, वोह उस के हाथ से गिर कर आप के एक छोटे साह़िबज़ादे पर जा गिरी जिस के बाइ़स उस का इन्तिक़ाल हो गया । लौंडी येह देख कर डर गई तो उन्हों ने फ़रमाया : डरने की ज़रूरत नहीं मैं ने तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद किया । (احیاء العلوم، ج۳،ص۲۱۹)

जहन्नम की आग और दुन्या की राख

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़स्मान ह़ीरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی के मुतअ़ल्लिक़ मन्क़ूल है कि एक मरतबा आप एक गली से गुज़रे तो किसी ने आप पर राख फेंक दी । आप अपनी सुवारी से उतरे और सजदए शुक्र बजा लाए, फिर अपने कपड़ों से राख झाड़ने लगे और राख डालने वाले को कुछ न कहा । आप से कहा गया कि आप राख डालने वाले को झिड़कते क्यूं

www.dawateislami.net

नहीं ? तो आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने (आ़जिज़ी करते हुवे) फ़रमाया : "जो जहन्नम की आग का मुस्तह़िक़ हो उस पर राख पड़े तो उसे गुस्से में नहीं आना चाहिये । (احیاء العلوم، ج۳،ص۲۱۷)

गालियों भरे ख़ुतूत़ पर आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن का सब्र

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में एक बार जब डाक पेश की गई, तो बा'ज़ ख़ुतूत़ मुग़ल्लज़ात (या'नी गालियों) से भर पूर थे । मो'तक़िदीन (मह़ब्बत करने वाले) बरहम (नाराज़) हुवे कि हम उन लोगों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दाइर करेंगे । इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने इरशाद फ़रमाया : "जो लोग ता'रीफ़ी ख़ुतूत़ लिखते हैं, पहले उन को जागीरें तक़्सीम कर दो, फिर गालियां लिखने वालों पर मुक़द्दमा दाइर कर दो ।" (ह़याते आ'ला ह़ज़रत जि. **1** स. **143-144** मुलख़्ख़सन मक्तबए नबविय्या मर्कज़ुल औलिया, लाहौर) मत़लब येह कि जब ता'रीफ़ करने वालों को तो इन्आ़म देते नहीं, फिर बुराई करने वालों से बदला क्यूं लें ?

(ग़ुस्से का इ़लाज. स. **24**)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن किस क़दर अफ़्वो दर गुज़र से काम लेते और ग़लत़ी करने वाले को मुआ़फ़ कर दिया करते । जब कि हमारा मुआ़मला येह है कि हमारे नामए आ'माल में नेकियां नाम को नहीं, शबो रोज़ गुनाहों में बसर होते हैं, आए दिन गुनाहों में मुसलसल इज़ाफ़ा ही होता जा रहा है । इस के बा वुजूद भी लड़ना झगड़ना, नाराज़ हो कर बैठ जाना, कोई मुआ़फ़ी मांगने आए तो उसे मुआ़फ़ न करना, बल्कि बे इ़ज़्ज़ती कर के उस की दिल आज़ारी करना बहुत बुरी आ़दत है कि ह़दीसे पाक में है कि जिस के पास उस का भाई मा'ज़िरत करने के लिये आया तो उसे चाहिये कि अपने भाई को मुआ़फ़ कर दे ख़्वाह वोह झूटा हो या सच्चा, जो ऐसा नहीं करेगा, ह़ौज़े कौसर पर न आ सकेगा ।" (المستدرک علی الصحیحین، کتاب البر والصلۃ، باب بروا آباء کم تبر کم ابناء کم ، رقم ۷۳۴۰، ج۵، ص۲۱۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें तो अपने बुज़ुर्गों की त़रह़ ऐसा होना चाहिये कि हमें तंग करने वाले का ज़ेह्न ही येह बन जाए कि मैं इसे तक्लीफ़ दूंगा तो येह मुझ से बदला नहीं लेगा, बल्कि रिज़ाए इलाही की ख़ातिर मुआ़फ़ कर देगा ।

मन्क़ूल है कि अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم ने अपने एक ग़ुलाम को बुलाया तो उस ने कोई जवाब न दिया, दूसरी और तीसरी बार फिर बुलाया, उस ने फिर कोई जवाब न दिया, येह देख कर आप उस की त़रफ़ गए, देखा तो वोह लैटा हुवा है, आप ने उस से कहा : क्या तुम ने मेरी आवाज़ नहीं सुनी थी ? ग़ुलाम ने कहा : सुनी थी । आप ने फ़रमाया : फिर तुम ने मेरी बात का जवाब क्यूं नहीं दिया ? ग़ुलाम ने कहा : आप की त़रफ़ से सज़ा से बे ख़ौफ़ था, इस वजह से सुस्ती के बाइ़स जवाब न दे सका । येह सुन कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : जा तू **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये आज़ाद है । (احیاء العلوم، ج۳، ص۲۱۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم किस क़दर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर थे, कि ग़ुलाम का क़ुसूर होने के बा वुजूद भी उस की ग़लती को न सिर्फ़ मुआ़फ़ कर दिया बल्कि रिज़ाए इलाही की ख़ातिर उसे आज़ाद भी कर दिया ।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मदनी वसिय्यतें

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه जो यादगारे सलफ़ शख़्सिय्यत हैं, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने भी रिज़ाए इलाही عَزَّوَجَلَّ पाने की निय्यत से अपने क़र्ज़दारों को पिछले क़र्ज़ों, माल चुराने वालों को चोरियों, हर एक को ग़ीबतों, तोह्मतों, तज़लीलों, ज़र्बों समेत तमाम जानी, माली ह़ुक़ूक़ मुआ़फ़ फ़रमा दिये और

www.dawateislami.net

आयिन्दा के लिये भी तमाम तर हुक़ूक़ पेशगी ही मुआ़फ़ कर दिये हैं, चुनान्चे, दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना का मत़बूआ़ **16** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाला **''मदनी वसिय्यत नामा''** सफ़ह़ा **10** पर इ़ज़्ज़त व आबरू और जान के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : मुझे जो कोई गाली दे, बुरा भला कहे (ग़ीबतें करे), ज़ख़्मी कर दे या किसी त़रह़ भी दिल आज़ारी का सबब बने, मैं उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये पेशगी मुआ़फ़ कर चुका हूं, मुझे सताने वालों से कोई इन्तिक़ाम न ले । बिल फ़र्ज़ कोई मुझे शहीद कर दे तो मेरी त़रफ़ से उसे मेरे हुक़ूक़ मुआ़फ़ हैं । वुरसा से भी दरख़्वास्त है कि उसे अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दें (और मुक़द्दमा वग़ैरा दाइर न करें) । अगर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के सदक़े मह़शर में ख़ुसूसी करम होगा, तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपने क़ातिल या'नी मुझे शहादत का जाम पिलाने वाले को भी जन्नत में लेता जाऊंगा बशर्ते कि उस का ख़ातिमा ईमान पर हुवा हो । अगर मेरी शहादत अ़मल में आए तो इस की वजह से किसी क़िस्म के हंगामे और हड़तालें न की जाएं । अगर **''हड़ताल''** इस का नाम है कि लोगों का कारोबार ज़बरदस्ती बन्द करवाया जाए नीज़ दुकानों और गाड़ियों पर पथराव वग़ैरा हो तो बन्दों की ऐसी ह़क़ तलफ़ियों को कोई भी मुफ़्तिये इस्लाम जाइज़ नहीं कह सकता । इस त़रह़ की हड़ताल ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है । इस त़रह़ के जज़्बाती इक़्दामात से दीनो दुन्या के नुक़्सानात के सिवा कुछ हाथ नहीं आता । (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. **112**)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमें भी ग़ुस्से पर क़ाबू पाने और अ़फ़्वो दर गुज़र की आ़दत अपनाने की सआ़दत नसीब फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

हमारी बिगड़ी हुई आ़दतें निकल जाएं
मिले गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा या रब
मुझे दे ख़ुद को भी और सारी दुन्या वालों को
सुधारने की तड़प और हौसला या रब
हमेशा हाथ भलाई के वासिते उठ्ठें
बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब (वसाइले बख़्शिश, स. **76**)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने सुना कि मुआ़फ़ कर देने की क्या क्या बरकात हैं ! प्यारे नबी, रसूले हाशिमी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने अ़फ़्वो दर गुज़र आप ने मुलाह़ज़ा फ़रमाई कि इस उम्मत के फ़िरऔ़न या'नी अबू जह्ल के बेटे को भी मुआ़फ़ी से नवाज़ दिया और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुआ़फ़ी की बरकत से वोह दरजए सह़ाबिय्यत के अ़ज़ीम मन्सब पर फ़ाइज़ हो गए, वोह इ़करमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه जो मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंगें किया करते थे, जब प्यारे आक़ा عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने उन की सारी ख़त़ाओं को मुआ़फ़ फ़रमा दिया तो इस की बरकत येह ज़ाहिर हुई कि ह़ज़रते सय्यिदुना इ़करमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मुसलमान हुवे और राहे इस्लाम में शहादत का जाम पी गए, याद रखिये ! ख़त़ा करने वाले को मुआ़फ़ कर देने से इ़ज़्ज़त में कमी नहीं बल्कि इज़ाफ़ा होता है, मुआ़फ़ करने वालों को **अल्लाह** तआ़ला पसन्द फ़रमाता है, कुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इ़ज़्ज़त वाला है, कुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ करने वाले को اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत नसीब होगी, कुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ करने वाले को اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत जन्नती ह़ूर अ़त़ा की जाएगी, कुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ करने वाले को सब से ज़ियादा बहादुर कहा गया, कुदरत के बा वुजूद मुआ़फ़ करने वाले को اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत दाख़िले जन्नत किया जाएगा ।

www.dawateislami.net

अ़फ़्वो दर गुज़र के मज़ीद फ़ज़ाइल जानने के लिये शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रसाइल **''अ़फ़्वो दर गुज़र के फ़ज़ाइल''**, **''ग़ुस्से का इलाज''**, **''ज़ुल्म का अन्जाम''**, और मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **''इह़याउल उ़लूम''** जिल्द **3** से **''हुस्ने ख़ुल्क़''** का बयान और **''तह़म्मुल मिज़ाजी की फ़ज़ीलत''** का मुत़ालआ़ फ़रमा लीजिये।

मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अ़फ़्वो दर गुज़र का जज़्बा पाने, गुस्से की बुरी आ़दत से पीछा छुड़ाने, गुनाहों से बचने और नेकियों का जज़्बा पाने के लिये तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मदनी माह़ोल की बरकत से आ'ला अख़्लाक़ी अवसाफ़ ग़ैर मह़सूस त़ौर पर आप के किरदार का ह़िस्सा बनते चले जाएंगे। अपने शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिरकत और राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये। इस की बरकत से अपने साबिक़ा तर्ज़े ज़िन्दगी पर ग़ौरो फ़िक्र का मौक़अ़ मिलेगा और दिल हुस्ने आ़क़िबत (अच्छी आख़िरत बनाने) के लिये बेचैन हो जाएगा, जिस के नतीजे में इरतिकाबे गुनाह की कसरत पर नदामत मह़सूस होगी और तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में मुसलसल सफ़र करने के नतीजे में फ़ोह़्श कलामी और फ़ुज़ूल गोई की जगह दुरूदे पाक जारी हो जाएगा, तिलावते कुरआन, ह़म्दे इलाही और ना'ते रसूल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ने की आ़दत बन जाएगी, गुस्से की जगह अ़फ़्वो दर गुज़र की आ़दत नसीब हो जाएगी, बे सब्री की आ़दत से नजात पा कर साबिरो शाकिर रहना नसीब होगा, बद गुमानी की जगह हुस्ने ज़न की आ़दत बन जाएगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

www.dawateislami.net

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का तआ़रुफ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों की तरबिय्यत और **नेकी की दा'वत** आ़म करने के लिये दा'वते इस्लामी के तह़्त तक़रीबन **96** शो'बा जात क़ाइम हैं । इन में से एक इन्तिहाई अहम शो'बा **''दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत''** भी है । दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़्बूआ़ **102** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **''इल्मो ह़िक्मत के 125 मदनी फूल''** सफ़ह़ा **21** पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का एक फ़रमान कुछ यूं नक़्ल है कि बहुत अ़र्से क़ब्ल किसी दीनी मद्रसे से वाबस्ता इस्लामी भाई ने मुझे बताया कि ''हमारे यहां जब कोई कम पढ़ा लिखा साइल, मस्अला दरयाफ़्त करने के लिये आता है तो बसा अवक़ात अन्दाज़े बयान या तर्ज़े तह़रीर पर उसे ख़ूब झाड़ पिलाई जाती है, मसलन कहा जाता है : कहां पढ़े हो ! आप को उर्दू में सुवाल लिखने का भी ढंग नहीं मा'लूम वग़ैरा, इस त़रह़ लोग बद ज़न हो कर चले जाते हैं, उन की परवाह नहीं की जाती । आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : येह बातें सुन कर मेरे दिल पर चोट लगी और मेरे मुंह से निकला اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ हम **12** दारुल इफ़्ता खोलेंगे ।'' शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का येह ख़्वाब **15** शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म **1421** सि. हि को उस वक़्त पूरा हुवा जब जामेअ़ मस्जिद कन्ज़ुल ईमान, बाबरी चोक बाबुल मदीना (कराची) में तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के तह़्त दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का आग़ाज हुवा । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ता दमे बयान बाबुल मदीना (कराची) में **4** दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत क़ाइम हैं, इस के इलावा ज़म ज़म नगर (ह़ैदराबाद) सरदाराबाद, (फ़ैसलाबाद), मर्कज़ुल औलिया (लाहौर), रावलपिन्डी और गुल्ज़ारे त़ैबा (सरगोधा) में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत, प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की दुखयारी उम्मत की शरई रहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल हैं ।

www.dawateislami.net

इस के इलावा ''मजलिसे इफ़्ता'' के तहूत काम करने वाले शो'बे ''दारुल इफ़्ता ऑन लाइन'' के इस्लामी भाई इन्तिहाई ज़िम्मेदारी के साथ टेलीफ़ोन और इन्टरनेट पर दुन्या भर के मुसलमानों की त़रफ़ से पूछे जाने वाले मसाइल का हाथों हाथ ह़ल बताते हैं। اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस शो'बे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले इस्लामी भाई रोज़ाना सेंकड़ों सुवालात के जवाबात देते हैं। दारुल इफ़्ता ऑन लाइन से, इन्टरनेट के ज़रीए, दुन्या भर से इस मेल एड्रेस (darulifta@dawateislami.net) से सुवालात के जवाबात पूछे जा सकते हैं। दुन्या भर से हाथों हाथ शरई रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये, इन नम्बर्ज़ पर राबित़ा भी किया जा सकता है।

नम्बर नोट फ़रमा लीजिये

(1) 0300-0220112 (2) 0300-0220113

(3) 0300-0220114 (4) 0300-0220115

पाकिस्तानी वक़्त के मुत़ाबिक़ सुब्ह़ **10** बजे से शाम **4** बजे तक इन नम्बर्ज़ पर राबित़ा किया जा सकता है। बरोज़े जुमुआ़ ता'त़ील होती है।

मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये !

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के शो'बा जात में दिन ब दिन इज़ाफ़ा ही होता जा रहा है और इस का मदनी काम मज़ीद तरक़्क़ी की त़रफ़ गामज़न है। इस मदनी माह़ोल की बरकत से बे शुमार अफ़राद अपनी गुनाहों भरी ज़िन्दगी से ताइब हो कर नेकी की दा'वत को आ़म करने के लिये ज़ैली ह़ल्क़े के मदनी कामों में बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने वाले बन गए। ज़ैली ह़ल्क़े के **12** मदनी कामों में से एक मदनी काम हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिरकत भी है, اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस इजतिमाअ़ में शिरकत की बड़ी बरकतें हैं। इल्मे दीन की मह़फ़िल में शिरकत का सवाब मिलता है और इल्मे दीन सीखने की फ़ज़ीलत के बारे में ह़दीस में है कि जो शख़्स इल्म की त़लब में किसी रास्ते को चले, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को

जन्नत के रास्ते पर ले जाता है और ता़बिले इ़ल्म की ख़ुशनूदी के लिये फ़िरिश्ते अपने बाज़ू बिछा देते हैं।

(سنن الترمذی"، کتاب العلم، باب ماجاء في فضل الفقه علی العبادة، الحدیث: ۲۶۹۱، ج۴، ص۳۱۲.)

हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने की भी बड़ी बरकतें हैं। आइये ! एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं।

सीनेमा घर के मालिक की तौबा

बाबुल इस्लाम सिंध के मश्हूर शहर ज़म ज़म नगर (ह़ैदराबाद) के एक इस्लामी भाई ने कुछ इस त़रह़ बताया कि ग़ालिबन येह **1991** ई. के किसी हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ वाली रात की बात है, मेरी मुलाक़ात एक सीनेमा घर के मालिक से हुई जो कि शराबी और गुनाहों का आ़दी था। मैं ने इनफ़िरादी कोशिश करते हुवे उसे तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की दा'वत पेश की, कुछ पसो पेश के बा'द वोह मेरे हमराह चल पड़ा। इख़्तितामी दुआ़ के दौरान सीनेमा घर के मालिक की ह़ालत ग़ैर हो गई। ह़त्ता कि दुआ़ ख़त्म होने के बा'द भी उस का हिचकियों के साथ रोना बन्द न हुवा। बा'द में उस ने बताया कि मैं ने जब दुआ़ के लिये हाथ उठाए और आंखें बन्द कीं तो ऐसा लगा, जैसे दुआ़ की बरकत से मेरे दिल की सख़्ती दूर हो रही है, मुझे अपने किये हुवे गुनाह याद आने, इन का अन्जाम डराने और ख़ौफ़े ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में रुलाने लगा। इसी दौरान जिस वक़्त कि मेरी आंखें बन्द थीं, मैं ने अपने आप को मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا में सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद के रू बरू पाया, हर त़रफ़ नूर फैला हुवा था और भीनी भीनी ख़ुश्बू से फ़ज़ा महक रही थी। मैं काफ़ी देर तक सब्ज़ गुम्बद के जल्वों से अपने दिल को मुनव्वर करता और रोता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली है।

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ वोह मेरे साथ पाबन्दी से इजतिमाअ़ में आने लगे, पंज वक़्ता नमाज़ भी शुरूअ़ कर दी। एक दिन जब मैं मुलाक़ात के लिये पहुंचा तो उन्हों ने बताया कि मेरे बा'ज़ वोह दोस्त जिन्हों ने बदकारी के मुआ़मलात से आज तक मुझे नहीं रोका, बल्कि मेरे साथ शराब व रबाब की महफ़िलों में हमेशा आगे आगे रहते थे, मेरी इजतिमाअ़ में शिरकत और नेकियों की त़रफ़ रग़बत का सुन कर मेरे पास आ पहुंचे। उन में जो अ़क़ाइदे अहले सुन्नत से मुत्तफ़िक़ नहीं था, वोह मुझे समझाते हुवे कहने लगा : "तुम जिन के इजतिमाअ़ में जाते हो येह लोग तो बद अ़क़ीदा हैं, कि औलियाए किराम की नियाज़ दिलाते हैं, **या रसूलल्लाह** पुकारते हैं, इन के साथ मत जाया करो।" सीनेमा घर के मालिक का कहना है कि मैं ने उस से कहा कि "मैं ने दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल सिर्फ़ सुन कर नहीं, बल्कि देख कर अपनाया है, मैं ने तो दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में शिरकत की और वहां मुझे इस इस त़रह़, मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللّٰہُ شَرَفًا وَّ تَعْظِیْمًا की ज़ियारत हुई, अब तुम बताओ जिन आ़शिक़ाने रसूल के इजतिमाआ़त में गुम्बदे ख़ज़रा के जल्वे नज़र आते हों, येह किस त़रह़ ग़लत़ हो सकते हैं ? मेरा तो मश्वरा है कि तुम भी दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में शामिल हो जाओ। ख़ुदा की क़सम ! अब तो कोई मेरे बच्चों के गलों पर छुरी फेर दे, तब भी मैं दा'वते इस्लामी का मदनी माह़ोल नहीं छोड़ सकता। (ग़ीबत की तबाहकारियां, स. **432**)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी

www.dawateislami.net

सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکاۃُ الْمَصابِیح، ج۱ص۵۵حدیث۱۷۵دارالکتب العلمیۃ بیروت)

सुन्नतें आ़म करें दीन का हम काम करें

नेक हो जाएं मुसलमान मदीने वाले

“चल मदीना” के सात हुरूफ़ की निस्बत से जूते पहनने के 7 मदनी फूल

1 फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जूते ब कसरत इस्ति'माल करो कि आदमी जब तक जूते पहने होता है गोया वोह सुवार होता है। (या'नी कम थकता है) (مُسلِم ص۱۱۶۱حدیث۲۰۹۶)

2 जूते पहनने से पहले झाड़ लीजिये ताकि कीड़ा या कंकर वग़ैरा हो तो निकल जाए।

3 पहले सीधा जूता पहनिये फिर उलटा और उतारते वक़्त पहले उलटा जूता उतारिये फिर सीधा।

4 मर्द मर्दाना और औ़रत ज़नाना जूता इस्ति'माल करे।

5 सदरुश्शरीआ़, बदरुत्त़रीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं : औ़रतों को मर्दाना जूता नहीं पहनना चाहिये बल्कि वोह तमाम बातें जिन में मर्दों और औ़रतों का इम्तियाज़ होता है इन में हर एक को दूसरे की वज़्अ़ इख़्तियार करने (या'नी नक़्क़ाली करने) से मुमानअ़त है, न मर्द औ़रत की वज़्अ़ (तर्ज़) इख़्तियार करे, न औ़रत मर्द की। (बहारे शरीअ़त हिस्सा **16**, स. **65** मक्तबतुल मदीना)

6 जब बैठे तो जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं।

7 (तंगदस्ती का एक सबब येह भी है कि) औंधे जूते को देखना और उस को सीधा न करना, लिहाज़ा इस्ति'माली जूता उलटा पड़ा हो तो सीधा कर दीजिये।

www.dawateislami.net

त़रह़ त़रह़ की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ दो कुतुब, ''**बहारे शरीअ़त**'' **हिस्सा 16** (**312** सफ़ह़ात) नीज़ **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

ख़ूब होगा सवाब टलेगा अ़ज़ाब पाओगे बख़्शिशें, क़ाफ़िले में चलो
दिल पे गर ज़ंग हो, सारा घर तंग हो दाग़ सारे धुलें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِى الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़ कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह़मत भरे हाथों से उतार रहे हैं । (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ١٥١ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे । (اَیضاً ص ٦٥)

www.dawateislami.net

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े : صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِيْع ص۲۷۷)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां :

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِيْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلَاةً دَآئِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

ह़ज़रते अह़मद सावी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات)

(6) क़ुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰى لَهٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص۱۲۵)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

-: मिन जानिब :-

MAJLISE TARAJIM, BARODA (DAWATE ISLAMI)

translation.baroda@dawateislami.net (+ 91 9327776311)

www.dawateislami.net